

M. T. R. COLLEGE, SURAT

*Manuscripts Library*

No. <sup>Ref.</sup>  
<sub>Sur.</sub>

739

Title:

*Kacha Mitha*



739

ग्रहमख

:	Grähe-makha	:	Title
:	:	:	Author
:	:	:	Editor
:	Naka 17/2	:	Year. Vols.
:	:	:	Publisher
739	:	:	Remarks



गन्-मः श्रीगणेशाय नमः॥ अथ गन्धमखलिरव्यते॥ एवं युगविशेषणादिदिश्यां पुष्पनिधौ  
 १ श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अमुककर्मणि गत्वेन नवग्रहदेवतासंगपतमहं करिष्ये॥ प्रणव  
 स्य परब्रह्मैविः॥ परमात्मा देवता॥ देवीगायत्री छंदः॥ व्याहृतीनां क्रमेण जम  
 दग्निभरिदा जभगवत्सुपमः॥ अग्निर्वायुः सूर्यो देवता॥ देवीगायत्री देव्युच्छिक्  
 देवीवृहत्त्यछंदांसि॥ सूर्याद्यावाहने० तत्र गृहीतमध्ये वर्तुले द्वादशांशुले प्राङ्मुखं सूर्य  
 रक्तपुष्पाक्षतैः॥ अहोरेण हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप् सूर्यावाहने विनियोगः॥ ॐ आह  
 ष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशाय नमते मर्त्ये च॥ हिरण्ययेन सवितारथेना देवो यतिभुव  
 नानि पश्यन्॥ भूर्भुवः स्वः कलिंगदेशोद्भवकाश्यपसंगोत्रसूर्यइहागच्छे हतिष्ठसूर्याय नमः॥  
 सूर्य आवाहयामि॥ तत आग्नेयचतुरस्रचतुर्विंशंगुले प्रत्यङ्मुखं सोमं श्वेतपुष्पाक्ष  
 तैः॥ आप्याय स्वगोत्रमः सोमो गायत्री॥ सोमावाहने विनियोगः॥ ॐ आप्याय स्व  
 समेतुते विश्वतः सोमवृक्ष्यं॥ भवावाजस्य संगथे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धमुनातीरोद्भवा  
 नेयसंगोत्रसोमेहागच्छे हतिष्ठेति स्थापयेत्॥ सोमं आ॥ ततो दक्षिणे त्रिकोणे श्र्यं  
 गुले दक्षिणांशुं रक्तपुष्पाक्षतैः॥ अग्निर्हविर्विरूपांगारको गायत्री॥ भो १

मावाहने विनियोगः॥ ॐ अग्निर्हविर्विरूपांगारको गायत्री॥ भो  
 ति॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्ती समुद्रवक्षोर राजसंगोत्रभोमेहागच्छे हतिष्ठेति स्था  
 पयेत्॥ भोमं आ॥ तत ईशांश्वे वाणाकारचतुरगुले उदङ्मुखं बुधपीतपुष्पाक्ष  
 तैः॥ उदुध्यध्वं बुधः सोम्या बुधस्त्रिष्टुप्॥ बुधावा॥ ॐ उदुध्यध्वं समनसः स स्वा  
 यः समग्निमिध्वं बहवः सनीकाः॥ दधिक्लामग्निमुषसं देवीमिंद्रावतावस  
 निद्वयेवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भवान्नेयसंगोत्रबुधेहागच्छे हतिष्ठेति  
 स्थापयेत्॥ बुधं आ॥ तत उत्तरेक्षीर्णचतुरस्रषडंगुले उदङ्मुखं बृहस्प  
 तिपीतपुष्पाक्षतैः॥ बृहस्पत्यस्य मदा बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्॥ बृहस्पत्यावा॥  
 ॐ बृहस्पते अतियदयो अर्हाद्युमदिभाति क्रतुमज्जनेषु॥ यदीदय उवसक्त  
 तप्रजाततदस्मात्तुद्विणंधे हि विज्रं॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सिंधुदेशोद्भव आंगिरस  
 गोत्रबृहस्पते इहागच्छे हतिष्ठेति स्थापयेत्॥ बृहस्पतिं आ॥ ततः पूर्वेष्वं च को  
 णेन वांगुले प्राङ्मुखं शुक्रं शुक्रपुष्पाक्षतैः॥ शुक्रः पाराशरः शुक्रोद्विषदावि  
 राट्॥ शुक्रावाहने विनियोगः॥ ॐ शुक्रः शुक्रं क्रांतो नजारः पद्मासमीची दिवो



म. म. नज्योतिः॥ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोऽवभाषवसगोत्रभुकेहागळेहतिष्ठेति  
 २ स्थापयेत्॥ भुर्भुवः आ॥ ततः पश्चिमेधनुः विष्णुगुले प्रसङ्गः मुखशानिरुक्लपुष्पा  
 क्षतेः॥ शमग्निरिरिंविठः शानिरुक्लिक॥ शान्यावा॥ॐ शमग्निरग्निभिः करुणं  
 नस्तपुस्तुः॥ शं वातो वावरया अयास्मिधः॥ॐ भूर्भुवः स्वः सो राष्ट्रदेशोऽव  
 काश्यपसगोत्रशानेश्वरेहागळेहतिष्ठेति स्थापयेत्॥ शानेश्वरं आ॥ ततो नैऋत्ये  
 श्वर्याकारे द्वादशांगुले दक्षिणामुखं राहुं रुक्मपुष्पाक्षतेः॥ कयानो वामदेवो रा  
 हुर्गायत्री॥ राहुवाहने॥ॐ कयानश्चित्राभुवद्वती सदा वधः सरवा॥ कया  
 शविष्मदात्ता॥ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनाष्ट्रोऽवपौष्टिनसगोत्रराहोऽहागळेह  
 तिष्ठेति स्थापयेत्॥ राहुं आ॥ ततः वायव्ये ध्वजाकारे षडंगुले दक्षिणामुखं केतुं  
 अपुष्पाक्षतेः॥ केतुं रुक्मपुष्पाक्षतेः॥ केतवोगायत्री॥ केतवावतनेवि॥ॐ केतुं  
 रुक्मपुष्पाक्षतेः॥ केतवे पेशो मयी अपेशसे॥ समुषडिरजायथाः॥ॐ भूर्भुवः स्वः अंत  
 र्वेदी समुद्रवाः जेमिनसगोत्राः केतवदहागळेहतिष्ठेति स्थापयेत्॥ केत  
 रं आ॥ तत्पुष्पाभावे यथा प्राप्तेः॥ अथाधिदेवताः॥ अंबकं वसिष्ठोरुद्रो २

नुष्ट॥ ईश्वरावाहने विनियोगः॥ॐ अंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनं॥ उर्वारुकमिव बं  
 धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ॐ भूर्भुवः स्वः एवं सर्वत्र ईश्वरेहागळेहतिष्ठेति स्था  
 पयेत्॥ सूर्यदक्षिणपार्श्वे ईश्वरं आ॥ गोरीर्मिमायदीर्घतमा उमा जगती॥ उमावाह  
 ने॥ॐ गोरीर्मिमा॥ रुक्म॥ उमेदहागळेहतिष्ठेति सोमदक्षिणपार्श्वे उमां आ॥ यह  
 कंदो दीर्घतमा स्कंदत्रिष्टुप्॥ स्कंदावाहने॥ॐ यह कंदः प्र० रुक्म॥ स्कंदेहागळेहतिष्ठे  
 ति सोमदक्षिणपार्श्वे स्कंदं आ॥ विष्णोर्नुकंदीर्घतमानारायणस्त्रिष्टुप्॥ नारायणावाहने  
 विनियोगः॥ॐ विष्णोर्नुकंदी० के० रु० नारायण इहागळेहतिष्ठेति बुधदक्षिणपार्श्वे नारा  
 यणं आ॥ ब्रह्मजज्ञानं गोतमो वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप्॥ ब्रह्मावा॥ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं  
 पुरस्तादिसीपतः सुरुषो वेन आवः॥ सवध्या उपमा अस्या विष्ठाः सतश्च योमि सतश्च विवः॥  
 ब्रह्मं निहागळेहतिष्ठेति गुरुदक्षिणपार्श्वे ब्रह्माणं आ॥ इंद्रं वोमपुच्छं दा इंद्रा गायत्री॥  
 इंद्रावा॥ इंद्रं वो विष्णु० रुक्म॥ इंद्रेहागळेहतिष्ठेति भुक् दक्षिणपार्श्वे इंद्रं आ॥ यमायसो  
 मं यमो यमो नुष्ट॥ यमावाह॥ॐ यमायसोमं सुनुतं रुक्म॥ यमेहागळेहतिष्ठेति शनि  
 दक्षिणपार्श्वे यमं आ॥ मोपुणोद्योरः कण्वः काळो गायत्री॥ काळावाह॥ॐ मोपुणः प० रुक्म॥

x वेव स्वतो २



म. म.  
३

कालरहागछहतिष्ठराहुदक्षिणपार्श्वे कालं आवा ॥ उषा वा जं प्रस्कृत्वा भिन्नगुप्तो वृहती ॥  
विन्नगुप्तावा ॥ ३० ॥ उषा वा जं हिवं ॥ ११ ॥ कृक ॥ विन्नगुप्तावा गछहतिष्ठकेतुदक्षिणपार्श्वे  
विन्नगुप्तावा ॥ ततः शुक्रं तंदुलैरेवैः सर्वप्रत्यधिदेवताः ॥ अग्निकाण्वो मेधातिथिर  
ग्निगीयत्री ॥ अग्न्यावा ॥ ३० ॥ अग्निदूतं वृ ॥ कृक ॥ अग्नेरहागछहतिष्ठसूर्यवामपार्श्वे  
अग्निआ ॥ अप्सु मे मेधातिथिरांधो नुष्टुप ॥ अंबावाहने विनियोगः ॥ ३० ॥ अप्सु मे सा  
मो भूकृ ॥ आपः इहा गछहतिष्ठतसोमवामपार्श्वे आपः आवा ॥ स्याना मेधातिथि  
भूमिगीयत्री ॥ भूम्यावा ॥ ३० ॥ स्यामाष्ट ॥ कृक ॥ भूमेरहागछहतिष्ठभौमवामपार्श्वे  
भूमिआवा ॥ इदं विष्णु मेधातिथिर्विष्णुगीयत्री ॥ विष्ण्वावा ॥ ३० ॥ इदं विष्णु ॥ कृक ॥ वि  
ष्णो इहा गछहतिष्ठबुधवामपार्श्वे विष्णु आवाह ॥ इदं अश्विनिगृत्समदंड इक्षि  
ष्टुप ॥ इद्रावा ॥ ३० ॥ इदं अश्विनि इविगा ॥ कृक ॥ इदं इहा गछहतिष्ठशुक्रवामपार्श्वे इद्रा ॥  
इद्राणीवृषा कपिरिद्राणी वंक्तिः ॥ इद्राण्यावाहने विनियोगः ॥ ३० ॥ इद्राणीमासुना ॥ कृक ॥  
इद्राणी इहा गछहतिष्ठशुक्रवामपार्श्वे इद्राणी आ ॥ प्रजापतेरिहिरण्यगर्भः प्रजाप  
तिस्त्रिष्टुप ॥ प्रजापत्यावा ॥ ३० ॥ प्रजापतेन त्व ॥ कृक ॥ प्रजापते इहा गछहतिष्ठशनिवाम ३

पार्श्वे प्रजापतिं आ ॥ आयंगोः सार्पराक्षी सर्पा गायत्री ॥ सर्पावाहने वि ॥ ३० ॥ आयंगोः एभिद ॥ कृक  
सर्पाः इहा गछहतिष्ठतराहुवामपार्श्वे सर्पा आ ॥ ब्रह्मजज्ञानंगो तमो ब्रह्मात्रिष्टुप ॥  
ब्रह्मावा ॥ ३० ॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पु ॥ कृक ॥ ब्रह्मनिहा गछहतिष्ठकेतुवामपार्श्वे ब्रह्माण  
आवा ॥ ततः शुक्रं तंदुलैः ॥ गणानां चोशो न को गृत्समदंड गणपतिर्जगती ॥ विनायका  
वा ॥ ३० ॥ गणानां चो ॥ विनायके ह गछहतिष्ठराहोरुत्तरतो विनायक आवा ॥ जानवेदसे  
कश्यपो दुर्गात्रिष्टुप ॥ दुर्गावा ॥ ३० ॥ जानवेदसे ॥ कृक ॥ दुर्गे इहा गछहतिष्ठशने रुत्तरतो  
दुर्गा आवा ॥ तव वैद्यो व्यभ्रागिरसो वायुगीयत्री ॥ वाय्वावा ॥ ३० ॥ तव वायु वृत्त ॥ कृक ॥ वा  
यो इहा गछहतिष्ठरवोरुत्तरतो वायु आवा ॥ आदिहूत्स आकाशो गायत्री ॥ आकाशावा ॥  
ॐ आदिहूत्सस्य ॥ कृक ॥ आकाशे इहा गछहतिष्ठराहोर्दक्षिणतः आकाश आ ॥ एषो उषा  
प्रस्कृत्वा भिनो गायत्री ॥ अभ्यावा ॥ ३० ॥ एषो उषा अ ॥ कृक ॥ अभिनो इहा गछहतिष्ठ  
तं केतोर्दक्षिणतः अभिनो आ ॥ वास्तोष्पते वसिष्ठावास्तोष्पतिरनुष्टुप ॥ वास्तोष्पत्या  
वा ॥ ३० ॥ वास्तोष्पते प्रति ॥ कृक ॥ वास्तोष्पते इहा गछहतिष्ठउत्तरवास्तोष्पतिं आवा ॥ क्षेत्र  
स्यपतिना गमदेवः क्षेत्राधिपतिरनुष्टुप ॥ क्षेत्रपालावा ॥ ३० ॥ क्षेत्रस्यपतिना वयं ॥ कृक ॥ क्षे  
त्रपाल इहा गछहतिष्ठउत्तरक्षेत्रपालं आवा ॥ ततो लोकपाला नृ ॥ इदं विश्वा जेतामधु







५२. म. अंगुले नोष्ठिताः सर्वे शतमहोत्तरं सहा ॥ इति ध्यानं ॥ अथ पूजा ॥ सहस्र-  
 आवाहनं। पुरुष एव दमासनं। एतावानस्य निपाद्यं। निपादध्वं मर्च्ये। तस्मादि-  
 राकावमनीये। यत्पुरुषेण स्नानं। तं यत्नं वस्त्रं। तस्माद्यज्ञादियुपवीतं। तस्मा-  
 द्यज्ञा सर्वं हुतं च इति गंधं। तस्मादध्याशतं पुष्पं। यत्पुरुषं धरं। ब्राह्मणा-  
 स्य दीपं। चंद्रमा मनसाने वेद्यं। नाभ्या आसीति पुष्पांजलिं। सप्तास्यासन्नि-  
 ति पदक्षिणा। यत्स नयतामिति पूजा निवेदनं ॥ इति ग्रहयज्ञयोगः ॥ अ-  
 थ बडिदानविधिः ॥ लं नायं क्रमः ॥ आतारं इंद्रं गर्गं इंद्रं स्निग्धं। इंद्रं पीत्य-  
 र्थं बडिदाने विनियोगः ॥ ॐ आतारमिंद्रं। क्रक। इंद्राय सांगाय संपरिवाराय  
 साधुधाय सत्ताक्तिकाय इमं स्निग्धं माषभक्तं बलिं समर्पयामि ॥ इंद्राय नमः।  
 गंधाय च वाशस्तमर्पयामि ॥ भो इंद्रं दिशं रवलिं भक्षममयजमानस्य वा-  
 सकुटुंबस्यायुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता शांति कर्त्ता भूय ॥ एवं सर्वत्र ॥ अग्नि-  
 काण्वो मेधातिथिराग्निगीयत्री ॥ अग्निप्रीत्यर्थं बडि- ॥ ॐ अग्निं हतं ॥ क्रक ॥

अमये सांगाय ॥ मि ॥ भो अग्नये दिशं रक्ष भव ॥ यमाय सोमं यमो यमो नुष्टुप ॥ यमप्री-  
 त्यर्थं ब ॥ यमाय सोमं ॥ क्रक ॥ यमाय सांगाय ॥ भो यमदिशं रक्ष भव ॥ ततः नेर्क-  
 त्यामोषुणोद्यारः कण्वो निर्कृतिगीयत्री ॥ निर्कृतिप्रीत्यर्थं ब ॥ ॐ मोषुणः प ॥ क्रक ॥  
 निर्कृते सांगाय ॥ मि ॥ भो निर्कृते दिशं रक्ष भव ॥ ततः पश्चिमे ॥ तत्त्वायाभिष्टुनः  
 शोषो वरुणः स्निग्धुप ॥ वरुणप्रीत्यर्थं ब ॥ ॐ तत्त्वायामि ॥ क्रक ॥ वरुणाय सांगाय ॥  
 मि ॥ भो वरुणदिशं रक्ष भव ॥ ततो वायवे ॥ तव वायव्यं वागिर सोवायुगीयत्री ॥  
 वायुप्रीत्यर्थं ब ॥ ॐ तव वायव्यं तस्य ॥ क्रक ॥ वायवे सांगाय ॥ मि ॥ भो वायो दिशं रक्ष  
 भव ॥ ततः उत्तरे ॥ सोमो धेनुंगो वमः सोमस्निग्धुप ॥ सोमप्रीत्यर्थं ब ॥ ॐ सोमो धे-  
 नुं ॥ क्रक ॥ सोमाय सांगाय ॥ मि ॥ भो सोमदिशं रक्ष भव ॥ ततः ईशाय ॥ तमीशा-  
 नंगो तम ईशानो जगती ॥ ईशानप्रीत्यर्थं ब ॥ ॐ तमीशानं ज ॥ क्रक ॥ ईशानाय  
 सांगाय ॥ मि ॥ भो ईशानदिशं रक्ष भव ॥ अथ ग्रहांश्च ॥ पूर्वा आकस्मेन हिरण्य-  
 स्तपः सविता स्निग्धुप ॥ सूर्यप्रीत्यर्थं ब ॥ ॐ आकस्मेन ॥ क्रक ॥ सूर्याय सांगाय संपरि-  
 वाराय साधुधाय सत्ताक्तिकाय इमं स्निग्धं माषभक्तं बलिं समर्पयामि ॥ इति देवता प्रत्यधिदेवतासहि



ग. म. ता य इ मं स दी पं मा ष भ क्तु व लिं स म र्प या मि ॥ भो सूर्य इ मं व लिं गृ हा ण म म य ज मा न वा  
 स कु टु ब स्या भुः क तौ क्षे म क तौ भु भ क तौ त्रिं ति क तौ भ वा ॥ त नो आ ग न ये ॥ आ  
 ध्या य स्व गो त मः सो मा गा य त्री ॥ सो म प्री त्य र्थं व लि ॥ ॐ आ प्या य स्व ॥ ॠ क ॥ सो  
 मा य सां गा य स प रि वा रा य उ मा अं बु रू पा धि दे व ता प्र त्य धि दे व ता य इ मं स दी ॥  
 मि ॥ भो सो म इ मं व लिं गृ हा ण म म य ॥ भ वा ॥ अग्नि र्भु र्धा वि रू पां गा र को गा य त्री ॥  
 अं गा र क प्री त्य र्थं व ॥ अग्नि र्भु र्धा ॥ ॠ क ॥ अं गा र को य सां गा य स प रि वा रा य स्व  
 द भ र मि रू पा धि दे व ता प्र त्य धि दे व ता य इ मं स दी ॥ भो अं गा र क इ मं व लिं गृ हा ण  
 भ वा ॥ त त ई शा न्य ॥ उ द्य ध्वं बु धः सो म्यो बु धा स्त्रि धु प्र ॥ बु ध प्री त्य र्थं व ॥ ॐ उ  
 द्य ध्वं ॥ ॠ क ॥ बु धा य सां गा य स प रि वा रा य सा यु धा य स त्रि ति का य ना रा य ण  
 वि ल्पु रू पा धि दे व ता प्र त्य धि दे व ता स हि ता य इ मं स दी पं ॥ मि ॥ भो बु ध इ मं व लिं  
 गृ हा ण भ वा ॥ त त उ त र ॥ बृ ह स्प ते गृ त्स म दो बृ ह स्प ति स्त्रि धु प्र ॥ बृ ह स्प ति प्री  
 त्य र्थं व ॥ ॐ बृ ह स्प ते अ ति ॥ ॠ क ॥ बृ ह स्प ते सां गा य स प रि वा रा य ॥ ब्र ह्म द्रु  
 पा धि दे व ता प्र त्य धि दे व ता स हि ता य इ मं स दी ॥ मि ॥ भो बृ ह स्प ते इ मं व लिं ॥ भ वा ॥

त तः पू र्वे ॥ शु क्रः पा रा शरः शु क्रो द्वि प दा वि रा ट् ॥ शु क्र प्री त्य र्थं व ॥ शु क्रः शु शु कां ॥ ॠ  
 शु का य सां गा य ॥ इं द्रे णी रू पा धि दे व ता प्र त्य धि दे व ता स हि ता य इ मं स दी ॥ मि ॥  
 भो शु क्र इ मं व लिं ॥ भ वा ॥ त तः पश्चि मे ॥ रा मा ग्नि रि रिं वि ठः श नि रु त्मि क ॥  
 श नी श्व र प्री त्य र्थं व ॥ ॐ रा मा ग्नि रग्निः ॥ ॠ क ॥ श नी श्व रा य ॥ य म प्र जा प ति रू पा  
 धि दे व ता प्र त्य धि दे व ता स हि ता य इ मं व ॥ मि ॥ भो श नी श्व र इ मं व लिं ॥ भ वा ॥ ने त्र  
 त्यां ॥ क या नो वा म दे वा रा हु गी य त्री ॥ रा हु प्री त्य र्थं व ॥ ॐ क या न श्व त्र ॥ ॠ क ॥ रा ह  
 वे सां गा य ॥ का क स र्प रू पा धि दे व ता प्र त्य धि दे व ता स हि ता य ॥ इ मं स दी ॥ मि ॥ भो रा हो  
 इ मं व लिं ॥ भ वा ॥ के तुं रु ष ण ष्व न धु चं दाः के तु गी य त्री ॥ के तु प्री त्य र्थं व लि दा ॥ ॐ के  
 तु रु ष्व न ॥ ॠ क ॥ के तु वे सां गा य ॥ वि त्र यु स ब्र ह्म स्व रू पा धि दे व ता प्र त्य धि दे व ता  
 य इ मं स दी ॥ मि ॥ भो के ता इ मं व लिं गृ हा ण म म य ज मा न स्य वा स कु टु ब स्य ॥ भ वा  
 ग णा नां ता गृ त्स म दो ग ण य ति र्ज ग ती ॥ वि ना य क प्री त्य र्थं व ॥ ॐ ग णा नां ता ॥  
 ॠ क ॥ वि ना य का य सां गा य स प रि वा रा य रु द्धि बु धि स हि ता य इ मं स दी ॥ मि ॥ भो  
 वि ना य क इ मं व लिं गृ हा ॥ भ वा ॥ आ त वे द स क र य पो जा त वे दा दु गी त्रि धु प्र ॥ दु गी प्री त्य



ग. म. र्थे बलिहा. ७३० जानवेदसे. ॥ कृ. दुर्गायै सांगाये सपरिवारायै. इमं सदी. मि. ॥ भो दुर्गे  
 ७ इमं बलिगृहाण मम यजमानस्य वासकुटुंबस्यायुः कर्त्रीक्षेमकत्रे. ॥ भवा. तव  
 वायो व्यश्वांगिरसो वायुर्गायत्री. ॥ वायुप्रीत्यर्थं बलि. ७३० तव वायव्ये नृक. वाय  
 वे सांगा य स. मि. ॥ भो वायो इमं बलिगृहाण. ॥ भवा. आदिप्रत्नस्य आकाशा  
 गायत्री. ॥ आकाशाप्रीत्यर्थं ब. ७३० आदिप्रत्नस्य. ॥ आकाशा य सांगा य. इमं सदी.  
 मि. ॥ भो आकाशा इमं बलिगृ. ॥ भवा. एषोऽप्राप्रस्कृवाश्विनो गायत्री. ॥ अश्विनो  
 प्रीत्यर्थं ब. ७३० एषोऽप्रा. ॥ अश्विनो सांगा य सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां सशक्ति  
 काभ्यां इमं सदी. मि. ॥ भो अश्विनो इमं बलिगृहीतं मम सकुटुंबस्यायुः कर्त्रीक्षेम  
 कर्त्रीक्षे शांतिकर्त्रीक्षे निर्विघ्नकर्त्रीक्षे भवतां वास्तोष्पते प्रतिजा. ॥ वास्तोष्पते सा  
 गा य सपरि. ॥ इमं सदी. मि. ॥ भो वास्तोष्पते इमं बलिगृहाण. ॥ भवा. गायत्र्या  
 विश्वामित्रो भुवनेश्वरी गायत्री. ॥ भुवनेश्वरी प्रीत्यर्थं ब. ७३० भुवः स्वः गाय  
 त्र्या बलि. ॥ भुवनेश्वर्यै. मि. ॥ भो भुवनेश्वर्यै इमं बलिगृहाण. ॥ त्रिक्षेमकत्रे. ॥  
 भवा. इंद्राणी वषाकपिरिंद्राणी पंक्तिः. इंद्राणी प्रीत्यर्थं ब. ७३० इंद्राणी मास्तु ना. ७

इंद्राण्यै सांगा ये सपरिवारायै. मि. ॥ भो इंद्राणी इमं बलिगृ. ॥ त्रीक्षेमकत्रे. ॥ भवा. इंद्रा  
 विश्वामित्र इंद्रो गायत्री. ॥ इंद्रप्रीत्यर्थं ब. ७३० इंद्रा वषाकपि. इंद्राय सांगा य स  
 परिवाराय. मि. ॥ भो इंद्र इमं बलिगृ. ॥ भवा. यथा लिङं बलिं दद्यात्. ततोक्षेत्रपा  
 लबलिः. ॥ क्षेत्रस्य पातवीमदेवः क्षेत्रपाल उष्टुप. ॥ क्षेत्रपाल प्रीत्यर्थं ब. ७३०  
 क्षेत्रस्य पातिना वयं. ॥ क्षेत्रपाल भूतप्रेतपिशाचैराक्षसशाकिनीडाकिनीवेता  
 कादिपरिवारयुता य इमं सदी पंसतां बलं सदक्षिणा माषभक्त बलिं समर्पयामि  
 ति इत्थं जव. ॥ भो क्षेत्रपाल इमं बलिगृहाण मम यजमानस्य वासकुटुंबस्या  
 युः कर्त्रीक्षेमकर्ता शुभकर्ता शांतिदस्तु पुष्टिदस्तु छिदो वरदो भवेति संप्रार्थ्य.  
 शांता पृथिवी. ॥ शांतिः. ॥ ततः हस्तोपादो प्रक्षाल्या चम्य पूर्णा इति कुर्यात्.  
 दादरा गृहीतं आज्यं नस्तु च पूरयित्वा. तदुपरि फलं निधाय. समुद्रादूर्ध्वं शि  
 त्तचस्य गौतमो वामदेवो निस्त्रिष्टुप. पूर्णा. ७३० समुद्रादूर्ध्वं धुमां उदा  
 र. ॥ कृ. मधुमं तंत उर्मि स्वाहा. ॥ इदमं जेय वैश्वानराय वसुक्रदादित्येभ्यः शतक  
 नवे सप्तवते गये अद्भ्य नमः. पूर्णपानविमो कादिसंज्ञा जपाने कृत्वा ततः पंचोप



नमः चारैः पूजयित्वा क्षमाप्य ॥ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते ॥ अभ्यारमिदं द्वयोः ॥ यो लुदे  
वगणाः सर्वे पूजा मादाय पार्थिव ॥ इष्टं कामप्रसिध्यर्थं पुनरागमनाय  
वा ॥ अनेन मंत्रेण विस्तृत्य ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्ति नमः परमेश्वरा ॥  
यत्र ब्रह्मा दयो देवास्तत्र गच्छ कुलाग्रज ॥ विस्तृते न ॥ होमसंगता सिध्य  
र्थं यथाशक्ति ब्राह्मणा भोजयेत् ॥ यथाशक्ति भूयसी दक्षिणा दालुमह  
मुस्तृजेत् ॥ कर्म गुरुपी श्री परमेश्वरः प्रीयंतां नमः ॥ तत्सद्गुणार्पणम  
स्तु ॥ ॥ श्री ॥ श्रीशके १७१२ साधारण संवत्सरे भाद्रपद १४ चतुर्दश्या  
तद्दिनी दंपुस्तकं लिखितं ॥ स्वार्थं परार्थं च ॥ अत्र केचन प्रसंन ॥ ॥  
श्रीः यथैवमुक्तं नाम्नाः कन्यकायाः अथ करिष्यमाण विवाहं गृह्णते गण  
पतिपूजनं पूर्वकं स्वस्ति पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नां दीक्षां ग  
हयज्ञमं उपप्राते आकुल देवतादि स्थापनं च करिष्ये ॥